वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :2 अंक : 169 शुक्रवार 14 अक्टूबर 2022 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

पति-पत्नी के आपसी प्रेम और समर्पण का महापर्व करवा चौथ को दिन भर बिना कुछ खाए-पीए रहकर सुहागिनो ने अपने पति की लंबी आयु, सुखी जीवन, सौभाग्य और समृद्धि की कामना के साथ रात को चंद्रमा के दर्शन कर मनाया।

जयपुर में रेजीडेंट्स की हड़ताल जारी

इमरजेंसी में काम बंद करने से एसएमएस में बिगड़ी व्यवस्थाएं; 27 नए डॉक्टर्स ने दी ज्वाइनिंग

जयपुर. कासं। बॉण्ड नीति के विरोध में हड़ताल पर चल रहे रेजीडेंट्स डॉक्टर्स ने जयपुर में इमरजेंसी में भी अपनी सेवाएं बंद कर दी। इसका सबसे ज्यादा असर जयपुर के एसएमएस हॉस्पिटल में देखने को मिला। रेजीडेंट्स के इस कदम के बाद एसएमएस प्रशासन को गंभीर मरीजों के लिए डॉक्टर्स की वैकल्पिक व्यवस्था करनी पड़ी। हड़ताल से एसएमएस में बढ़ती परेशानी को देखते हुए मेडिकल हेल्थ डिपार्टमेंट ने 27 और डॉक्टर्स की सेवाएं हॉस्पिटल प्रशासन को दी है। इधर रेजीडेंट्स डॉक्टर्स के संगठन जार्ड ने देर शाम प्रदर्शन करते हुए एसएमएस मेडिकल कॉलेज से त्रिमूर्ति सर्किल तक कैंडल मार्च निकाला और त्रिमूर्ति सर्किल पर एक घंटे तक धरना दिया। एसएमएस हॉस्पिटल के अधीक्षक डॉ. अचल शर्मा ने बताया कि हॉस्पिटल में 11 अक्टूबर से अब तक 77 डॉक्टर्स ने ज्वाइन कर लिया है, जिन्हें इमरजेंसी, ट्रोमा और उनकी योग्यता के अनुसार अलग-अलग डिपार्टमेंट में सर्विस के लिए लगाया है। उन्होंने बताया कि इमरजेंसी से रेजीडेंट्स के कार्य बहिष्कार से व्यवस्थाएं तो प्रभावित हुई हैं, लेकिन इन्हें पटरी पर लाने का प्रयास किया जा रहा है।

न्यायाधिपति पंकज मिथल की शपथ ग्रहण से पूर्व राज्यपाल से शिष्टाचार मुलाकात

जयपुर. शाबाश इंडिया। राज्यपाल कलराज मिश्र से गुरुवार को राजभवन में न्यायाधिपति पंकज मिथल ने मुलाकात की। राजस्थान उच्च न्यायालय में मुख्य न्यायाधिपति के रूप में शपथ ग्रहण से पूर्व उनकी राज्यपाल मिश्र से यह शिष्टाचार भेंट थी।

निस्वार्थता वक्ता को सुनकर किया नशे का त्याग: मुनि पुगंव श्री सुधासागर जी

श्रमण संस्कृति संस्थान शिविर हुआ प्रारंभ, दो हजार साल बाद बेटियां बैठेगी गादी पर

ललितपुर. शाबाश इंडिया

मेहनत करने पर भी सफलता को प्राप्त नहीं हो रहें। कौन है जो सफलता नहीं दें रहा तुमने अपने परम हितकारी से चोरी की उनसे चोरी की तो सौ जन्म में भी सफल नहीं हो सकते। एक व्यक्ति प्रवचन में बैठा था उस दिन गुटके पर प्रवचन हो रहा था उस व्यक्ति ने आज तक परिवार वालों के कहने पर गुटके का त्याग नहीं किया था लेकिन महाराज जी के प्रवचन से प्रभावित होकर त्याग कर दिया। परिवार वालों ने महाराज श्री को आकर कहा आपको देवता सिद्ध हैं मैं वोला मुझे देवताओं की जरूरत नहीं है मैं देवताओं को सिद्ध करने साधु नहीं देवता मेरे पीछे घूमते हैं उस व्यक्ति ने बताया कि परिवार वालों को मेरी आवश्यकता है आप गुटका छोड़ने की बात कह रहे थे तो मैं ये सोच रहा था कि महाराज जी को मेरे गुटका छोड़ने से क्या लाभ है आपको क्या लेना देना आपको क्या लाभ है आप इतनी गर्मी में सिर्फ गुटका पर एक घंटे से बोल रहें थे ये जो घर के लोग आये है इनका तो स्वार्थ है मैंने सोचा कि आज जो बोल रहे थे इनका कोई स्वार्थ नहीं है फिर भी कह रहे हैं तो यदि मैंने आज नहीं छोड़ा तो मेरी बबार्दी निश्चित है। यही विचार करके मैंने आज आपके प्रवचन सुनकर गुटका के साथ नशें का त्याग कर दिया छोड़ दिया परिवार तो स्वार्थी हो सकता है संत नहीं उक्त आश्य के विचार मुनि पुगंव श्रीसुधासागरजी महाराज ने ललितपुर ने

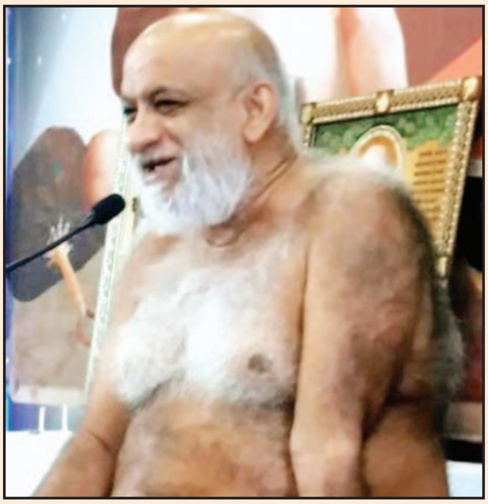

धर्म सभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

बेटी दिवस पर कहा अब बेटियां गादी संभालेगी

मध्यप्रदेश महासभा के संयोजक विजय धुर्रा ने बताया कि ललितपुर में परम पूज्य मुनि पुगंव श्री सुधासागर जी महाराज के सान्निध्य में श्रमण संस्कृति संस्थान शस्त्री वर्ग का दस दिवसीय सम्मेलन अभिनन्दनोदय तीर्थ में चल रहा है। जिसमें बालकों के साथ बेटियां भी भाग ले रही है जो शास्त्रसभा की गददी पर बैठ कर धर्म समारोह को सम्बोधित कर सकेगी। कल मुनि पुगंव ने कहा था कि दो हजार साल बाद विधिवतशिक्षा ग्रहण कर बेटिया शास्त्री आचार्य बनकर धर्म सभा करेंगी वे बेटी दिवस पर बोल रहें थे। भगवान महावीर स्वामी की परम्परा में पहली बार गुरुकुल से बेटियो को शिक्षित किया जा रहा है । जो श्रमण संस्कृति संस्थान में विद्या अध्ययन कर रही है । जहां सभी प्रकार की सुविधाएं निशुल्क है ।

हितेशी की दृष्टि अलग होती है

मुनि पुगंव ने कहा कि एक व्यक्ति वो है जो मांगने पर हमें दे नहीं रहा तो दुश्मन है दुसरे वे जो हमारे अभिभावक है हमारे हितेशी तो उनका दृष्टिकोण अलग है वो जानती है कि वह तुम्हारे हितकारी है जो ये वो जानते हैं कि ये वस्तु तुम्हारे लिए अहितकारी है ये विचार करना है किसने मना किया जिस चीज की मना किया आपके हितेशी है कि नहीं ।

जिस चीज को मना करें उसको छोड़ दें

ये निर्णय आत्मा में से हों जाये गुरु ने जिस बात को मना किया उसको नहीं माना तो समझ लेना तुम्हारा पतन प्रारंभ हो गया दुश्मन जिस चीज की मना करें तो उस काम को जरूर कर लेना कौन मना कर रहा है ये सूत्र बना लेना दुश्मन कभी तुम्हारा हितेशी हो ही नहीं सकता दुर्योधन को जब नगन होकर बुलाया तो श्री कृष्ण जी ने उसे रास्ते में देखा तो कहते हैं कि नग्न होकर जा रहा है शर्म नहीं आती कहां एक लंगोटी लगा लें और यहीं लंगोटी दुर्योधन की मृत्यु का कारण बनी हमें कुछ भी नहीं पता है कि क्या अच्छा है क्या बुरा है कुछ भी पता नहीं है हम तो ये जानते हैं कि मां गुरु कभी स्वप्न में भी अहित कारी नहीं हो सकता जब तुम्हारी आत्मा से आवाज आये कि मेरे अभिभावक मेरे गुरु कभी अहितकर नहीं हो सकते।

स्काउट एवं गाइड जम्बूरी के कार्यों की समीक्षा

जम्बूरी के सफल आयोजन में नहीं रखेंगे कोई कमी: मुख्यमंत्री

राजस्थान को 67 वर्ष बाद मिला मेजबानी का अवसर। राजस्थान में राष्ट्रीय स्काउट एवं गाइड जम्बूरी 4 जनवरी 2023 से

जयपुर. शाबाश इंडिया

मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने पाली के रोहट में 4 से 10 जनवरी, 2023 तक होने जा रहे राष्ट्रीय स्काउट गाइड जम्बूरी की व्यापक तैयारियों का जायजा लेते हुए कहा कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर की यह जम्बूरी प्रदेश में स्काउट एवं गाइड का अब तक का सबसे बड़ा आयोजन होगा। उन्होंने कहा कि राज्य को 67 साल बाद इस जम्बूरी की मेजबानी का अवसर मिला है और सरकार इसके सफल आयोजन के लिए कोई कमी नहीं रखेगी। गहलोत गुरूवार को मुख्यमंत्री कार्यालय पर राजस्थान राज्य भारत स्काउट्स एवं गाइड द्वारा आयोजित होने वाली 18वीं राष्ट्रीय स्काउट गाइड जम्बूरी की तैयारियों की समीक्षा बैठक को सम्बोधित कर रहे थे। गहलोत ने कहा कि ऐसे आयोजनों से स्वास्थ्य, चरित्र, कला एवं कौशल, सेवा भावना तथा अनुशासन जैसे गुणों का विकास होता है, सामाजिक समरसता, सौहार्द, सद्भावना व आपसी भाईचारे की भावना का भी संचार होता है और हमने ग्रामीण ओलम्पिक खेलों का आयोजन भी इसी उद्देश्य के साथ करवाया था। उन्होंने कहा कि विभिन्न देशों व राज्यों की संस्कृतियों को समझने का यह एक सुनहरा अवसर है। इस जम्बूरी में भाग लेने वाले सम्भागी राजस्थान की मेहमान नवाजी की एक सुखद स्मृति लेकर लौटेंगे। मुख्यमंत्री ने प्रसन्नता व्यक्त की कि सभी विभागों के अधिकारी पूर्ण निष्ठा एवं समन्वयता के साथ इस जम्बूरी की तैयारियों में जुटे हैं। उन्होंने ऐसी सड़कें, शामियाना, मंच एवं हैलीपेड की पुख्ता व्यवस्था के साथ-साथ पेयजल, शौचालय एवं स्नानघरों, बिजली, आवास, राशन की पर्याप्त व्यवस्था और राज्यों के दलों के लिए आवागमन की व्यवस्था करने हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। बैठक में बताया गया कि रीको, सार्वजनिक निर्माण एवं जलदाय विभाग के अधिकारियों द्वारा जम्बूरी स्थल पर चल रहे कार्यों को समयबद्ध पूर्ण कर उनकी गुणवत्ता की नियमित मॉनिटरिंग की जा रही है। जोधपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड एवं बिजली विभाग द्वारा जम्बूरी के समय विद्युत की अबाधित आपूर्ति सुनिश्चित तथा चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग द्वारा 24 घण्टे आपातकालीन चिकित्सकीय सुविधाएं मुहैया करवाई जाएगी। जम्बूरी से पूर्व एवं जम्बूरी के दौरान विभिन्न माध्यमों द्वारा नियमित रूप से व्यापक प्रचार-प्रसार एवं जम्बूरी स्थल पर प्रदर्शनियां भी आयोजित होंगी।

रोटरी क्लब के स्थापना दिवस पर एक हजार वाहनों के लगाए स्टीकर

रोहित जैन. शाबाश इंडिया

नसीराबाद। रोटरी क्लब नसीराबाद के स्थापना के 58 वर्ष पूर्ण होने पर गुरुवार को रोटरी क्लब की ओर से यातायात पुलिस की सहायता से एक हजार वाहनों पर रेडियम के स्टीकर लगाए गए रोटरी क्लब के अध्यक्ष अमित तापड़िया ने बताया कि रोटरी क्लब के चार दिवस के उपलक्ष में उत्कृष्ट सामाजिक सेवाएं देते हुए ट्रैफिक पुलिस के शिव प्रसाद के सहयोग से वाहनों पर निशुल्क एक हजार रेडियम स्टीकर लगाए गए ताकि रात्रि के समय दिखाई दे। इस अवसर पर सभी रोटेरियन साथी उपस्थित थे।

कौनसे पल जिंदगी रूठेगी क्या पता, इसलिए जो रूठे हैं उनको मना लो : समकितमुनिजी

नफरत देकर नहीं मिल सकता जीवन में प्रेम, उत्तराध्ययन आगम की 27 दिवसीय आराधना का 14वां दिन

सुनील पाटनी. शाबाश इंडिया

भीलवाड़ा। मरते हुए मरने का मजा लेना हो तो आसक्ति छोड़ दो। हमेशा मरने के लिए तैयार रहो तो मरने का भी आनंद आएगा। जिंदगी का कोई भरोसा नहीं है वह बेवफा है एक दिन ठुकरा देगी। जिंदगी रूठ जाती है तो मौत का सामान बनती है। कौनसे पल जिंदगी रूठेगी क्या पता इसलिए जो हमसे रूठे हुए है उनको मना लो। ये दुनिया जीते हुए के साथ जीती है और मरे हुए को बाहर निकाल देती है। इसलिए तप-संयम का अधिकाधिक पालन करते रहो। ये विचार श्रमणसंघीय सलाहकार सुमतिप्रकाशजी म.सा. के सुशिष्य आगमज्ञाता, प्रज्ञामहर्षि डॉ. समकितमुनिजी म.सा. ने शांतिभवन में गुरूवार को परमात्मा भगवान महावीर की अंतिम देशना उत्तराध्ययन आगम की 27 दिवसीय आराधना ''आपकी बात आपके साथ'' के 14 वें दिन व्यक्त किए।

जीवों की रक्षा के लिए सदैव तत्पर समिति की सदस्याएं

अनिल पाटनी. शाबाश इंडिया

अजमेर। श्री दिगम्बर जैन महासमिति महिला एवं युवा महिला अजमेर संभाग की अजमेर के हर क्षेत्र में स्थापित इकाइयों द्वारा पिछले 53 दिनों से लंपी स्कीन रोग महामारी की चपेट में आई गोमाताओ के लिए लगातार पोष्टिक हराचारा, गुड, चापड़, दलिया आदि की सेवा भेजी जा रही हैं। इसी कड़ी में आज पुनः पंचशीलनगर इकाई की सदस्याओं द्वारा पोष्टिक हरे चारे की एक ट्रॉली पंचशील नगर भेरूबाड़ा पर अस्थाई रूप से बनाए गए आइसोलेशन सेंटर पर भिजवाई गई। राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष मधु पाटनी ने बताया कि आज पंचशील नगर इकाई की वरिष्ठ सदस्य एवम महिला मंडल की अध्यक्ष नवल छाबड़ा एवं मंत्री भावना बाकलीवाल के संयोजन में इकाई अध्यक्ष प्रीति गदिया,उषा सेठी, मधु बिलाला, वंदना गंगवाल, मधु भैंसा, प्रीति काला,मंजू बाकलीवाल,मधु कासलीवाल, पुष्पा पाटनी, कमलेश बड़जात्या, सुनीता बाकलीवाल आदि के सहयोग से हराचारा की सेवा भिजवाई गई। श्री दिगम्बर जैन महासमिति अजमेर के अध्यक्ष अतुल पाटनी एवम महामंत्री कमल गंगवाल ने सेवा सहयोगियों के प्रति आभार ज्ञापित करते हुए जानकारी दी कि अभी गोवंश लंपी रोग से पूर्णतया छुटकारा नहीं मिल पाया है इसलिए इस सेवा को आगे भी जारी रखा जाएगा।

वेद ज्ञान

ओंकार की शक्ति

श्री गुरुग्रंथ साहिब का मंगलाचरण एक ओंकार से प्रारंभ होता हैं। श्री गुरु नानक देव जी महाराज ने पूरे गुरुग्रंथ साहिब में किसी न किसी रूप में अनेक बार इसे दोहराया है। ओंकार की महिमा का गुणगान वेद, उपनिषद् और पुराण सभी कर रहे हैं। ऐसा इसलिए, क्योंकि ओंकार का अर्थ एक सर्वव्यापी ध्वनि से है, जो निरंतर गूंजती रहती है। जैसे एक चालू कारखाने में निरंतर एक प्रकार की ध्वनि गूंजती रहती है, उसी प्रकार की ध्वनि सृष्टि-रचना की अनंत प्रक्रिया से सतत रूप से उत्पन्न होती रहती है, जिसका आकार ऊँ (ओंकार) जैसा ही होता है। इसीलिए इसे ओंकार कहते हैं। ओंकार कोई स्वर नहीं है और न ही इसका कोई अर्थ है। यह एक अनहद नाद है, जो अनादि और अनंत है, जो विश्व की अबाध गति का प्रमाण है। इस ऊँ (ओंकार) के महत्व को भारतीय दर्शन और संस्कृति ने बहुत महत्व दिया है। मानव निर्मित औद्योगिक सभ्यता से पहले आदिम युग में जब मनुष्य अरण्यवासी हुआ करते थे, तब उनकी इंद्रियां प्रकृति से एकाकार रहा करती थीं। पाश्चात्य दार्शनिक रूसो कहते हैं कि तब प्रकृति और मनुष्य के स्वभाव में भेद नहीं था। नगरीय-सभ्यता के आरंभ होते ही, यह एकता टूट गई। कारखानों के विकास और मशीनी युग के सूत्रपात ने प्रकृति और मानव के घनिष्ठ संबंधों को तोड़ दिया और मनुष्य स्वनिर्मित सभ्यता के शोर-शराबे में डूब गया। वह संवेदनशील न रहकर तार्किक और बौद्धिक होता गया। असीम से विलग होकर ससीम और संकुचित होता गया। प्राकृतिक ध्वनियों-प्रतिध्वनियों और मनुष्य के कान के मध्य, कल-कारखानों की अनवरत ध्वनि ने अपनी सत्ता स्थापित कर ली, जिससे ऊँ (ओंकार) की ध्वनि तो ओट में चली गई, किंतु इसका अर्थ यह नहीं होता कि सूर्य बादलों की ओट में चला गया है तो सूर्य सदा के लिए विलीन हो गया। गुरुनानक देव जी का प्रथम उद्घोष ओंकार ही था। यह उन्हें सुनाई पड़ा, उन्हें इसकी अनुभूति हुई, तभी तो आज विश्व इस ओंकार की अनूभूति के लिए व्यथित है, व्याकुल है। इस रचनात्मक ध्वनि को 'ब्रह्म' मान लिया गया। यही 'ऊँ' यानी ओंकार आज्ञा चक्र को जाग्रत करता है। गुरुनानक देव जी और गुरुगोविंद सिंह जी त्रिकालदर्शी थे।

संपादकीय

सुर्खियों में रही जापान से आई एक खबर

कुछ समय पहले जापान से आई यह खबर सुर्खियों में रही कि वहां एक व्यक्ति पैसे लेकर आम लोगों, खासकर बुजुर्गों के साथ समय बिताता है, उनसे बात करता है, उनके संग घूमता है। उसका कहना है कि जिन लोगों के साथ वह समय बिताता है, वे बार-बार उसे बुलाते हैं, क्योंकि उनसे बातचीत करने वाला कोई नहीं। यों जापान के बारे में अक्सर ऐसी खबरें आती हैं कि वहां परिवार टूट गए हैं और बड़ी संख्या में लड़के-लड़कियां विवाह के लिए राजी नहीं हैं। इस सामाजिक रवैये का हासिल यहां तक पहुंचा कि कुछ साल पहले जापान में अकेलेपन की समस्या को सुलझाने के लिए एक मंत्रालय गठित किया गया था। ब्रिटेन में भी ऐसा मंत्रालय बनाया गया था। वहां 2017 में काकस कमीशन ने अपनी एक रिपोर्ट में पाया था कि ब्रिटेन में नब्बे लाख के आसपास लोग अकेलेपन की समस्या से पीड़ित हैं। चीन की सरकार अब चाहती है कि दंपति तीन बच्चे पैदा करें, लेकिन लोग बच्चे नहीं पैदा करना चाहते।

आशय यह कि जिस परिवार को इन दिनों शोषण का सबसे बड़ा कारण बताया जाता है, उसी परिवार के टूटने से यह आफत आ रही है कि लोग अकेले होते जा रहे हैं। अमेरिका में परिवार की वापसी के नारे 1993 से लग रहे हैं। पिछले तीन साल में महामारी के दौरान परिवार की जरूरत को बहुत महसूस किया गया, लेकिन पहले जिस संस्था को तमाम विमर्श के जरिए दरकिनार किया गया, क्या उसकी पहले की शक्ल में वापसी इतनी आसान है? गौर से देखें तो परिवार के टूटने का सबसे अधिक लाभ दुनिया भर के व्यवसायी वर्ग को हुआ है। पहले लोग एक साथ रहते थे तो उनके खर्चे भी कम होते थे। एक घर, एक टीवी, एक कार से काम चल जाता था। वर्तमान मे पति-पत्नी, बेटा-बेटी और परिवार के अन्य लोगों को विशेष टीवी, कमरा, कार चाहिए। यहां से परिवार का बिखराव शुरू होता है। यह सच है कि परिवार में बहुत-सी उलझन भी होती है, लेकिन वह इनसे बड़ी नहीं, जितनी हम इन दिनों देख रहे हैं। तमाम फिल्मों, धारावाहिक, साहित्य की विधाओं में अक्सर अकेलेपन की एक गुलाबी तस्वीर दिखाई जाती है, जिसका मुख्य विचार होता है कि दुनिया के लिए नहीं, परिवार के लिए नहीं, अपने लिए जीना सीखो। जब तक हम युवा हैं, यह खुशनुमा तस्वीर बहुत अच्छा लगता है, जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है, पता चलता है कि तमाम संसाधनों के बावजूद अकेले रहना कितना मुश्किल है। तब अक्सर ऐसी शिकायती लहजे सामने आते हैं कि कोई पूछता नहीं, कोई फोन तक नहीं करता। कोई भी रिश्ता एक दिन में परिपक्व नहीं होता। रिश्तों में हमेशा निवेश करना पड़ता है। यह निवेश, समय, संसाधन, एक-दूसरे की चिंता और देखभाल का हो सकता है। मगर पश्चिम ने तो तमाम तरह के भावनात्मक लगाव को भी ह्यकेयर इकोनामीह्ल कह दिया और इसे भी पैसे की तराजू में तोला। कोई अकूत संपदा के मालिक हो सकता है, लेकिन इससे किसी की सदिच्छा और फिक्र नहीं खरीद सकते। **-राकेश जैन गोदिका**

परिदृश्य

बेलगाम बोल...

पिछले कई सालों से अल्पसंख्यक समुदाय को निशाना बना कर सत्तापक्ष के लोग भड़काऊ बयान देते आ रहे हैं। यह सिलसिला रुकने का नाम नहीं ले रहा। कई मामलों में देशव्यापी आक्रोश भी फूटा, कुछ मामलों में मुकदमे भी दायर कराए गए, मगर लगता है, उससे किसी ने कोई सबक नहीं लिया। इससे यही जाहिर होता है कि अब न तो उन्हें सामाजिक ताने-बाने की चिंता है और न कानून का भय। अभी दिल्ली के एक सार्वजनिक मंच से सत्तापक्ष के दिल्ली से एक सांसद और उत्तर प्रदेश में लोनी के विधायक ने अल्पसंख्यक समुदाय के खिलाफ जहर उगला। सांसद महोदय ने कहा कि एक विशेष समुदाय का संपूर्ण बहिष्कार जरूरी है। विधायक ने तो जोश में यहां तक स्वीकार किया कि दिल्ली दंगों के समय वे वहां उपस्थित थे। इन दोनों बयानों का वीडियो तेजी से प्रसारित होना शुरू हुआ तो पुलिस सक्रिय हुई और उस कार्यक्रम के आयोजकों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया। उन पर आरोप है कि उन्होंने कार्यक्रम की इजाजत नहीं ली थी। मगर नफरती बयान देने वाले नेताओं के खिलाफ न तो पार्टी ने कोई कड़ा रुख अपनाया है और न किसी कानूनी कार्रवाई की पहल हुई है। हालांकि यह पहला मौका नहीं है, जब सार्वजनिक मंचों से इस तरह अल्पसंख्यक समुदाय के खिलाफ जहर भरे बयान दिए गए। हरिद्वार और उसके बाद दूसरी जगहों पर धर्म संसद आयोजित कर नफरती भाषण दिए गए। कुछ समय पहले नुपूर शर्मा के बयान पर पूरी दुनिया के मुसलिम समाज ने तीखी प्रतिक्रिया जताई थी। उन्हें पार्टी से तो निलंबित कर दिया गया, मगर अभी तक वे कानून के शिकंजे से दूर ही हैं। कई राजनेता, जो बाकायदा चुनाव जीत कर आए हैं, वे अक्सर सार्वजनिक सभाओं में इस तरह के भड़काऊ भाषण देते देखे जाते हैं, मगर उनके खिलाफ कोई कानूनी कार्रवाई नहीं होती। इससे भी इन नेताओं का मनोबल बढ़ता है। सार्वजनिक जीवन में प्रतिनिधियों का व्यक्तिगत आचरण बहुत मायने रखता है, मगर इस तकाजे को ये राजनेता शायद नहीं समझते या समझना चाहते। उन्हें भरोसा है कि इसी तरह के बयानों से उनका जनाधार मजबूत होता है। लोकतांत्रिक मर्यादा की धज्जियां तो पिछले विधानसभा चुनाव के समय भी खूब उड़ी थीं, जब सार्वजनिक मंचों से जहर बुझे तीर चलाए गए थे। दरअसल, जब कोई भी राजनीतिक दल भड़काऊ भाषणों के जरिए ही अपना जनाधार बढ़ाने का प्रयास करे, तो उसमें सांप्रदायिक सौहार्द के लिए कड़े अनुशासन की अपेक्षा धुंधली पड़ जाती है। चुने हुए प्रतिनिधि किसी एक समुदाय के नहीं होते। उनकी जिम्मेदारी सभी धर्म और समुदाय के लोगों की सुरक्षा, सुविधा और बुनियादी हकों की हिफाजत की होती है। अगर वे ऐसा नहीं कर पाते, किसी समुदाय विशेष को वे खुद डराने का काम करते हैं, तो उनके प्रतिनिधित्व पर सवाल उठना स्वाभाविक है। अव्वल तो उनके खिलाफ खुद पार्टी को अनुशासनात्मक कदम उठाना चाहिए, ताकि दूसरे नेताओं के लिए नजीर बन सके। मगर वह ऐसा नहीं कर पाती, तो कानून को स्वतः संज्ञान लेकर सामाजिक ताने-बाने की सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए। अगर वोट की राजनीति के चलते समाज में नफरत का वातावरण बने, तो इसे किसी भी रूप में लोकतांत्रिक नहीं कहा जा सकता। ऐसी क्या बाध्यता है कि इस तरह के बयानों से सामाजिक समरसता को छिन्न-भिन्न करके ही कुछ लोग अपनी पहचान कायम रखने का प्रयास कर रहे हैं?

एतिहासिक नगर लाडनूं के जिन मन्दिरों की वन्दना की

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री वीतराग विज्ञान महिला मण्डल द्वारा एक दिवसीय तीर्थ वन्दना यात्रा के अन्तर्गत 41 सदस्यों का एक दल मंडल की सचिव सुशीला जैन अलवर वाले एवं यात्रा संयोजक प्रमिला जैन के सानिध्य में एतिहासिक नगर लाडनूं के जिन मन्दिरों की वन्दना की। प्रातः6.30 पर पंडित टोडरमल स्मारक भवन बापू नगर जयपुर के सीमंधर जिनालय के दर्शन करने के पश्चात बस से सीकर जिले के रैवासा स्थित वात्सल्य धाम व अपना परिवार वृद्धजन आवास गृह का अवलोकन किया। पास में ही स्थित दिगम्बर जैन भव्योदय अतिशय क्षेत्र रैवासा के दर्शन किए, प्राचीन व कलात्मक आयतन में भूगर्भ से प्राप्त भगवान सुमतिनाथ रैवासा वाले बाबा की बहुत ही अतिशयुक मनोहारी प्रतिमा है। यहां से दुजोद गांव पहुंच कर बहुत ही भव्य दिगम्बर जैन मंदिर दूजोद के दर्शन करें यहां पर महावीर स्वामी की सफेद संगमरमर की पद्मासन मनोहारी प्रतिमा है । यहां से प्रस्थान करके सुजानगढ़ पहुंचे । सुजानगढ़ समाज के अध्यक्ष सुनील जैन मंत्री पारसमल बगड़ा, डूंगरमल गंगवाल, संतोष गंगवाल, विनीत कुमार बगड़ा, संतोष छाबड़ा आदि ने यात्री दल का स्वागत किया व पदाधिकारियों का तिलक माला और दुपट्टा के द्वारा स्वागत किया मंडल की तरफ से हीरा चंद बैद ने सुजानगढ़ समाज का आभार व्यक्त किया और मंडल की गतिविधियों से अवगत कराया। विशाल मन्दिर के दर्शन किए। यहां पर रजत प्रतिमाओं का भव्य चैतालय यहां स्वर्ण मण्डित काष्ठ से निर्मित समवशरण की रचना के दर्शन कर सभी बहुत अभिभूत हुए।यहां से दिगम्बर जैन नसियां जी पहूंचे।जहां विशाल मानस्तम, व मार्बल से निर्मित नन्दीश्वर द्वीप जिनालय व पंचमेरु के दर्शन कर तीन भागों में विभक्त भव्यमन्दिर में बिराजमान बड़ी बड़ी भव्य प्रतिमाओं की वन्दना की। यहां खड्गासन मुद्रा की आदिनाथ से महावीर तक 24 तीर्थंकर प्रतिमा है ।बताया गया कि यहां के चन्द्र प्रभ व मुनिसुव्रतनाथ स्वामी की बहुत अतिशय कारी प्रतिमा है। यहां से प्रस्थान कर के सांय लगभग पांच बजे लाडनूं पहुंच कर यहां के विश्वविख्यात 1000 बर्ष से अधिक प्राचीन व कलात्मक बड़े मन्दिर के दर्शन कर सभी अभिभूत हो कर अपने आपको धन्य मान रहे थे। यहां पर भूगर्भ से प्राप्त प्राचीन प्रतिमाओं के साथ में नवीन प्रतिमाएं भी ऊपर वाले चौक के जिनालय में विराजमान है कहा जाता है की इस मंदिर के लगभग दस 12 फुट नीचे एक जिनालय स्वता ही अवतरित हुआ था इस जिसमें भगवान अजीत नाथ वह भगवान शांतिनाथ स्वामी की विशाल प्रतिमाएं विराजमान है। इनके समक्ष बहुत ही कलात्मक तोरण लगे हुए हैं अजीतनाथ भगवान के समक्ष वाला तोरण जमीन की खुदाई में प्राप्त हुआ था यहीं पर विश्व की बहुत ही कलात्मक एवं आकर्षक जैन सरस्वती की प्रतिमा है इस मंदिर के बाद में सामने ही दिगंबर जैन मंदिर बड़ा के दर्शनार्थ के दर्शन करने के पश्चात चंद्र सागर जिनालय पहुंचे इसमें मुख्य वेदी में मूलनायक भगवान महावीर स्वामी की सुन्दर प्रतिमा है इसी वेदी में दिगंबर जैन आचार्य वीरसागर जी महाराज शांति सागर जी महाराज, चन्द्र सागर जी महाराज की प्रतिमाएं भी विराजमान है इसके अलावा ऊपर की मंजिल में 4 अलग-अलग चैतालय है। यहां के दर्शन के बाद में हम सुखानंद आश्रम के बहुत ही विशाल एवं भव्य श्वेत पाषाण से निर्मित मंदिर पहुंचे । यहां बहुत ही आकर्षक वेदी में मूलनायक भगवान आदिनाथ की पीतल धातु की बड़ी प्रतिमा के अलावा दोनों तरफ के चैत्यालय में भरत एवं बाहूबली की लगभग 7 फुट ऊंची प्रतिमा है। बाहर मानस्तम व बाहुबली भगवान की विशाल प्रतिमा है।

लाडनूं के बड़े मन्दिर में बिराजमान अजितनाथ भगवान एवं इनके सामने का तोरण, सुदरासन गांव में खुदाई के समय मिला था।

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र रैवासा में बिराजमान भूगर्भ से प्राप्त अतिशयकारी 1008श्री सुमतिनाथ भगवान।

परिस्थितियां सदैव बदलती है इसलिए अहंकार मत करो: आचार्य श्री सुनील सागर जी

जयपुर. शाबाश इंडिया

गुलाबी नगरी जयपुर में आचार्य गुरुवर श्री सुनील सागर महा मुनिराज अपने संघ सहित भट्टारक जी की नसिया में चातुर्मास हेतु विराजमान है। प्रातः भगवान जिनेंद्र का जलाभिषेक एवं पंचामृत अभिषेक हुआ, उपस्थित सभी श्रावको ने पूजा कर अर्घ्य अर्पण किया।पश्चात गुरुदेव के श्री मुख से शान्ति मंत्रों का उच्चारण हुआ, सभी जीवो के लिए शान्ति हेतु मंगल कामना की गई। आज प्रातः बेला में मुनि 108 श्री सिद्धार्थ सागर जी , श्री सुज्ञेय सागर जी, श्री सुष्यान सागर जी, मुनि राज एवं क्षुल्लक श्री विजयन्त सागर जी का केश लोंच हुआ।सन्मति सुनील सभागार मे बाहर से आए सभी श्रावकों ने चिन्तामणी बज,रवी प्रकाश बगडा आदि ने अर्घ्य अर्पण कर चित्र अनावरण करते हुए दीप प्रज्जवलन कर धर्म सभा का शुभारंभ किया। उक्त जानकारी देते हुए चातुर्मास व्यवस्था समिति के प्रचार मंत्री रमेश गंगवाल ने बताया कि मंगलाचरण व मंच संचालन इन्दिरा बडजात्या जयपुर ने किया । चातुर्मास व्यवस्था समिति के महामन्त्री ओम प्रकाश काला ने बताया कि पाडवा से पधारे अतिथि महानुभावों ने आचार्य श्री के समक्ष श्रीफल अर्पण किया। चातुर्मास व्यवस्था समिति के मुख्य संयोजक रूपेंद्र छाबड़ा राजेश गंगवाल ने बताया धर्म सभा मे श्री चिन्तामणि बज व रवीप्रकाश बगडा नेआचार्य श्री का पाद प्रक्षालन किया। गुरुवर को जिनवाणी शास्त्र भेंट किया गया।पूज्य मुनि श्री सम प्रतिष्ठा सागर जी महाराज ने अपने प्रवचन में गुरुदेव वह अपनी दीक्षा के अनुभव बांटे उन्होंने आचार्य श्री महावीर कीर्ति जी एवं आचार्य श्री सन्मति सागर जी से कहां कैसे हुई आवृत्ति करने का और दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ यह सभी लोगों को बताया। पूज्य आचार्य भगवंत ने अपनी वाणी से पर कल्याण की भावना से उद्बोधन देते हुए कह कि वंदामी 24 जिनेशम् श्रद्धा से सर झुकाने से अभिमान मिट जाएगा और जिनवाणी का स्वाध्याय करोगे तो जीवन संवर जाएगा।

मुनिश्री के 14वे दीक्षा दिवस 14 अक्टूबर पर विशेष

आध्यात्मिक संत श्रमण श्री सुप्रभसागर जी मुनि एक विलक्षण संतः डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

श्रमण परम्परा अत्यन्त प्राचीन, उन्नत और गरिमामय है। श्रमण-संस्कृति की गरिमा और महिमा युगों-युगों से बड़ी प्रभावक एवं लोकप्रिय रही है। श्रमण संस्कृति के बिना हम भारतीय संस्कृति की कल्पना नहीं कर सकते हैं। भारतीय संस्कृति के उन्नयन में श्रमण संस्कृति का योगदान गौरवशाली रहा है। आज भी वह प्राचीन श्रमण संस्कृति भारतीय संस्कृति के उन्नयन में अपनी अहम भूमिका का निर्वाह कर रही है। श्रमण संस्कृति की गौरवशाली परंपरा में परम पूज्य आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज के प्रभावक शिष्य परम पूज्य श्रमण सुप्रभसागर जी मुनिराज अपनी आगमोक्त चर्या और आध्यात्मिक चिंतन के द्वारा निरंतर आत्मसाधना व प्रभावना में संलग्न हैं। आप श्रमण परंपरा के विलक्षण और तपस्वी संत हैं। आपने समाज और संस्कृति को एक नई दिशा दिखाई है।

जन्मः मुनि श्री सुप्रभसागर जी का जन्म जननी मां के जनक नाना के यहां, कोल्हापुर महाराष्ट्र में पिता सद-गृहस्थ श्रेष्ठी राजनशाह, माता सुशील-सरल स्वभावी जननी मां सुरमंजरी की कुक्षि से 13 दिसंबर सन 1981 में हुआ था। श्रमण मुनि श्री सुप्रभसागर जी का गृह ग्राम आध्यात्मिक धर्म नगरी सोलापुर महाराष्ट्र है, जहां एक ओर श्राविका आश्रम है तो दूसरी ओर जीवराज ग्रंथ माला है जहां से संपूर्ण विश्व में जैन साहित्य उपलब्ध कराया जाता है, ऐसी दर्शन- ज्ञान -चारित्र रूपी त्रिवेणी से संपन्न नगर में आपका बाल्यकाल व्यतीत हुआ। गौर वर्ण के शिशु का नामकरण 'तथा गुण यथा नाम' की युक्ति अनुसार मनोज्ञ रखा गया। आपकी नाट्यकला को देखकर सर्वजन आनंदित होते थे आपकी बुद्धि अत्यंत प्रखर थी। अतः आप ने अल्प वय में ही सीए तक उच्च शिक्षा प्राप्त की।

आचार्य श्री समंतभद्र जी के मिले संस्कार

आपके ननिहाल पक्ष से सुप्रसिद्ध दिगंबर जैन आचार्य श्री समंतभद्र जी महाराज हुए जिन्होंने खुरई, कारंजा आदि स्थानों पर गुरुकुल स्थापित किए थे। पूर्व संस्कार, पारिवारिक माहौल एवं वर्तमान सत्संगति वसात आपको उगते यौवन में ही जगत के राग -रंग से वैराग्य हो गया।

वैराग्य एवं आचार्य विशुद्ध सागर जी से व्रत ग्रहण

बचपन से ही आप धार्मिक कार्यक्रमों में अग्रणी रहते थे। सदैव धार्मिक माहौल को पसंद करते थे। आपने सन 2007 में गृह का त्याग कर दिया। परम पूज्य आचार्य श्री 108 श्री विशुद्धसागर जी महाराज की चरण निश्रा में

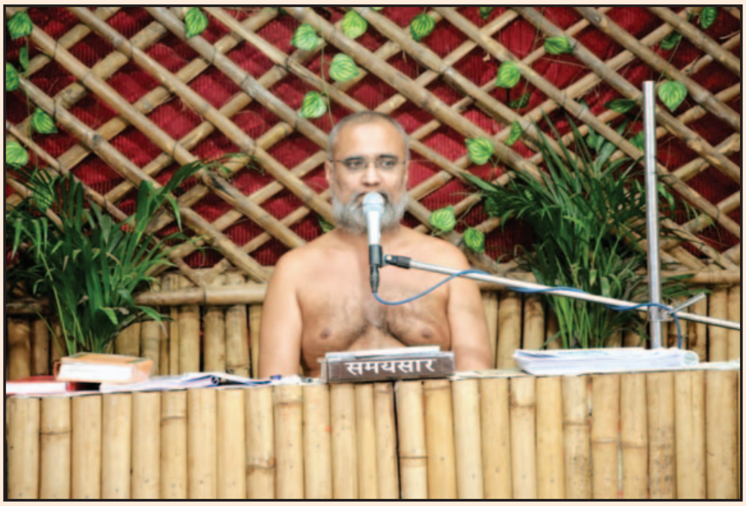

डॉ. सुनील जैन संचय
ज्ञान-कुसुम भवन, 874/1,
गांधीनगर, नई बस्ती, ललितपुर
284403 उत्तर प्रदेश
suneelsanchay@gmail. com

छत्रपति नगर इंदौर मध्य प्रदेश में सन 2007 में मार्ग 29 नवंबर को आपने दर्शन प्रतिमा के व्रत ग्रहणकर जीवन पर्यंत के लिए पैंट -शर्ट पहनने का त्याग कर दिया और धवल वस्त्र धारण कर लिए। इंदौर महानगर से गुरुवर का मंगल विहार हुआ तो ब्रह्मचारी मनोज्ञ जी भी गुरुवर के साथ हर दिन विहार करते रहे, उन्होंने गुरुवर को अपने हृदय में स्थापित कर लिया और गुरुवर भी नए -नवेले ब्रह्मचारी जी को भरपूर वात्सल्य देते। वैराग्य दिन- दूना- रात -चौगुना वर्धमान होता रहा। एक ही चाह एक ही लगन की जैनेश्वरी दीक्षा कब हो! माघ शुक्ला द्वितीया 8 फरवरी सन 2008 को भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव पन्ना में ब्रह्मचारी मनोज्ञ भैया जी ने दूसरी प्रतिमा के बारह व्रतों को उत्साह पूर्वक धारण किया। इस मध्य आचार्य विशुद्ध सागर जी ने अनेक ग्रंथों का अध्ययन अपने प्रिय ब्रह्मचारी मनोज्ञ जी को कराया। सन 2008 का वषायोग आचार्य विशुद्ध सागर जी ने संस्कारधानी जबलपुर मध्य प्रदेश में संपन्न किया। 24 अगस्त 2008 को ब्रह्मचारी मनोज्ञ भैया जी का प्रथम केशलोंच संपन्न हुआ।

मुनि दीक्षा

ब्रह्मचारी भैया मनोज्ञ जी शीघ्र- अतिशीघ्र दिगंबर मुद्रा को धारण करना चाहते थे। आचार्य श्री 108 श्री विशुद्ध सागर जी ने बैरागी के वैराग्य का परीक्षण कर मध्यप्रदेश के अशोकनगर में सन 2009 अक्टूबर की 14 तारीख को भव्य समारोह में अपार जनसमूह के मध्य ब्रह्मचारी भैया जी को जैनेश्वरी दीक्षा प्रदान की। आपका नामकरण श्रमण मुनि सुप्रभसागर किया गया । इसके उपरांत आप लगभग 6 वर्ष तक अपने दीक्षा गुरु के साथ रहकर धर्म ग्रंथों का अध्ययन करते रहे। मध्य में असाता कर्मोदय के कारण अंतराय और शारीरिक पीड़ा को समता पूर्वक सहन करते रहे।जैसे स्वर्ण अग्नि में तप कर ही चमकता है वैसे ही आपने रोगों को सहनकर अपने दृढ़ वैराग्य एवं आंतरिक समत्व भाव का परिचय दिया।

उपसंघ

अपने शिष्य की प्रतिभा को परख चुके आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी ने आपको धर्म प्रभावना के लिए प्रेरित किया फलतः सन 2016 छिंदवाड़ा से आपका पृथक उप- संघ बना। तब से अब तक आप नगर -नगर, गांव- गांव में पग विहार कर धर्म की प्रभावना कर रहे हैं । आप स्वभाव से ही शांत हैं। बड़ों के प्रति अतीव वात्सल्य की धार अनवरत बहती ही रहती है। आप अत्यंत वात्सल्यमयी हैं। एक सच्चे गुरु के सभी गुण आप में विद्यमान हैं।

तप-साधना अनूठी

आपकी तप- साधना भी अनूठी है। कभी रसी से आहार, कभी नीरस। कभी एक अन्न तो कभीऊँनोदर।कभी दो -दो, तीन -तीन उपवास तो कभी परिपूर्ण मौन साधना ।यथार्थ में आप ज्ञान एवं चर्या में अपने गुरु की प्रतिमूर्ति हैं। निरंतर आत्म साधना, श्रुत-साधना ही आपका ध्येय है। धर्म प्रभावना तो आप भरपूर करते ही हैं। मुनि श्री सुप्रभ सागर जी की साधर्मियों साधकों के प्रति सेवा भाव भी अनुकरणीय है। धर्म -आत्माओं का स्थितिकारण कैसे करना चाहिए यह मुनिश्री से सीखना चाहिए। आप निरंतर अष्टांग सम्यक्त्व का पालन करते हैं।

प्रवचन शैली मनमोहक

आपकी प्रवचन शैली प्रभावक एवं मनमोहनी है। जब आप धर्म सभा में विराज कर धर्म उपदेश देते हैं तो भक्तजन शांत हो जाते हैं। हजारों-हजार जैन-अजैन आपकी दिव्य वाणी का पान कर अपना अहोभाग्य मानते हैं। आप आध्यत्मिकता से परिपूर्ण ओजस्वी वक्ता के रूप में जाने जाते हैं। सूत्र वाक्यों में बड़ी से बड़ी बात कह देना आपकी प्रमुख विशेषता है। आप सहज, सरल व कठिन तपस्वी हैं। मुनिश्री एक श्रुतधर साधक के रूप में अपनी ज्ञानाराधना और शास्त्रानुशासन के संबल से अपने जनकल्याणी और जगतकल्याणी विचारों को आगम के संबल से ऊर्जित होकर साधनातीत जीवन की आत्यंतिक गहराईयों अनुभूतियों और वात्सल्य के संचार से मानवीय चिंतन के सतत परिष्कार में सतत सन्नद्ध होकर जीवन को एक सहज सरल जीने की एक कला हमें बतायी है। श्रमण परंपरा को गौरवान्वित किया है। सक्षम गुरु के सक्षम शिष्य हैं।

सृजन से समृद्ध हुआ साहित्य

आप प्रखर और ऊजार्वान वाणी के लिए तो जाने ही जाते हैं साथ ही अल्प साधना काल में ही बड़ी मात्रा में साहित्य सृजन कर मां जिनवाणी के भंडार और साहित्य जगत के भंडार को बढ़ाया है। आपका साहित्य सभी आयु वर्ग के लिए होता है इसलिए लोग आपकी प्रत्येक रचना को हाथोंहाथ लेते हैं। आपके साहित्य सृजन में कुछ इस प्रकार से है- सुनयनपथगामी, शुभ -लाभ, अहं या वहं, एक भ्रम, भवितव्यता, किसने लिखा। काव्य रचना के प्रति भी आपकी गहरी रुचि होने से आपकी लेखनी से अनेक काव्य रचनाएं भी निरंतर प्रसूत हो रहीं हैं जिनमें सोच , सुगुरु विशुद्धाष्टकम (संस्कृत), सोच नई। आपकी कृतियों का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद भी हुआ है , जिनमें प्रमुख हैं- स्वानुभव तरंगिणी (मराठी), पंचशील सिद्धांत (मराठी), नियम देशना (मराठी), सुनयनपथगामी (मराठी एवं अंग्रेजी)। आपके साहित्य सृजन से साहित्य का भंडार समृद्ध हुआ है।

बहु भाषाविद

श्रमण मुनि श्री सुप्रभ सागर जी महाराज का जन्म महाराष्ट्र में हुआ है। मातृभाषा मराठी, लौकिक शिक्षा सीए होने पर भी संस्कृत, प्राकृत, हिंदी, कन्नड़, अंग्रेजी आदि भाषाविद हैं। बुंदेलखंडी भी खूब बोलते हैं।आपकी प्रवचन शैली मन को मोहने वाली है। मातृभाषा मराठी होने के बाद भी हिंदी भाषा अच्छी है। भाषा सौष्ठव अनूठा है।

-निरंतर

डा.भारिल्ल ने सम्मानित किया हीरा चन्द बैद को

जयपुर. शाबाश इंडिया

दशलक्षण महापर्व के दौरान सुगंध दशमी के दिन जयपुर के विभिन्न दिगम्बर जैन मन्दिरों में ज्ञान वर्धक झांकियां सजाई गई थी। राजस्थान जैन युवा महासभा ने 28 झांकियों में से पंडित टोडरमल स्मारक भवन बापू नगर जयपुर के पंचतीर्थ जिनालय में पंडित रतन चन्द द्वारा लिखित पुस्तक पर आधारित ₹ इन भावों का फल क्या होगा ₹ झांकी को प्रथम स्थान पर चयनित किया। आचार्य सुनील सागर जी महाराज की उपस्थिति में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में यह पुरस्कार हीरा चन्द बैद, पंडित गौरव शास्त्री, आर्जव ने लिया। पंडित टोडरमल स्मारक भवन में चल रहे 25वें आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के एक कार्यक्रम के दौरान देशभर से आये श्रद्धालुओं से खचाखच भरे प्रवचन हाल में सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान डा.हुकम चन्द जी भारिल्ल ने यह पुरस्कार झांकी के मुख्य समन्वयक हीरा चन्द बैद एवं विधार्थियों को भेंट किया।

आचार्य श्री विनीत सागर जी ने कहा...

आचार्य वसुनंदी का वात्सलय के साथ-साथ ज्ञान भी अभिक्षण है...

नवदीक्षार्थी की गोद भराई 16 को कामां में

कामां. शाबाश इंडिया

अखिल भारतवर्षीय धर्म जागृति संस्थान शाखा कामा द्वारा दिगम्बर जैन आचार्य विनीत सागर महाराज के सानिध्य में विजयमती त्यागी आश्रम कामां में वात्सल्य मूर्ति, अभिक्षण ज्ञानोपयोगी अक्षर शिल्पी आचार्य वसुनंदी जी महाराज का 35 वां मुनि दीक्षा दिवस कार्यक्रम का आयोजन कर उनके व्यक्तित्व व कृतित्व पर वृहद प्रकाश डाला गया। कार्यक्रम के दौरान आचार्य विनीत सागर महाराज ने कहा कि आचार्य वसुनंदी महाराज की ज्ञान साधना अनवरत रूप से चलती रहती है इसलिए उन्हें अभिक्षण ज्ञानोपयोगी कहा जाता है। वो वात्सल्य से भरे हुए ऐसे संत हैं जो सभी अन्य संतो को प्रेरणा देकर ऊर्जा का संचार करते हैं। इस अवसर पर कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्य वसुनंदी के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन से प्रारम्भ हुआ तो धर्म जागृति संस्थान के राष्ट्रीय प्रचार मंत्री संजय जैन बड़जात्या ने कहा कि राजस्थान के धौलपुर जिले की मनिया तहसील के छोटे से गांव विरोंधा में पिता रिखबचन्द, माता त्रिवेणी देवी के आंगन में दिनेश के रूप में जन्म लेकर वर्तमान में आचार्य वसुंनदी के रूप में जैन धर्म की पताका फहरा रहे हैं। बोलखेड़ा गांव में जम्बूस्वामी की तपोस्थली का विकास भी उन्हीं की देन हैं। इस अवसर पर संजय सर्राफ अध्यक्ष ने कहा कि धर्म सिखाओ धर्म बचाओ का नारा बुलंद कर धर्म जागृति के लिए समर्पित सन्त हैं आचार्य वसुंनदी महाराज जो वर्तमान में संघ सहित बोरीबली मुम्बई में विराजमान हैं। आचार्य का वात्सलय बड़ा ही अदभुत तो है ही साथ ही भक्तों को आकर्षित करने की चुम्बकीय शक्ति विराजमान है। नवदीक्षार्थी सार्थक भैया की गोद भराई 16 को वर्षायोग समिति के तत्वावधान में आचार्य ज्ञानभूषण से 30 अक्टूबर को मनोज्ञ धाम मोदीनगर में जेनेश्वरी दीक्षा ग्रहण करने वाले नवदीक्षार्थी सार्थक भैया की गोद भराई रविवार सांय 6.30 बजे विजयमती त्यागी आश्रम में कर दीक्षा की अनुमोदना की जाएगी।

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला ने सराहा अजमेरा फैशन के फाउंडर अजय अजमेरा के महिला सशक्तिकरण के प्रयासों को

सुरत. शाबाश इंडिया

अजमेर फैशन के फाउंडर एवं भारतीय जैन संघटना सूरत के नव मनोनीत अध्यक्ष अजय अजमेरा ने सूरत के सर्किट हाउस में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला से मुलाकात की। जब बिड़ला को अजमेरा ने अपने टेक्सटाइल्स फर्म व उसके माध्यम से एक लाख लोगों द्वारा विशेष कर महिलाओं द्वारा रोजगार अर्जित करने की योजना को जाना तो उन्होंने इन प्रयासों को सराहा व इन प्रयासों को महिला सशक्तिकरण की और बढ़ते कदम बताया। बिड़ला ने जब यह जाना कि उनके यहां सस्ती से सस्ती साड़ियां महज 45 रु में बेची जाती है व ऊंची रेंज में हर किस्म की साड़ियां लेटेस्ट से लेटेस्ट स्वरूप में उपलब्ध रहती है तो बिड़ला ने अपने सहयोगी को अजमेरा के कॉन्टेक्ट नम्बर लेने का निर्देश दिया। सायंकाल भगवान महावीर यूनिवर्सिटी में छात्रों से संवाद कार्यक्रम में अपने उद्गार व्यक्त करते हुए बिड़ला ने महिला सशक्तीकरण के संदर्भ में अजमेरा के प्रयासों का उल्लेख भी किया। ये उल्लेखनीय है कि बिड़ला से मुलाकात करने हेतु अजमेरा के साथ भारतीय जैन संघटना के गुजरात प्रदेश अध्यक्ष प्रो डॉ संजय जैन, डोनेट लाइफ के फाउंडर निलेश मांडले वाला, समाजसेवी गणपत भंसाली, अणुव्रत समिति के राष्ट्रीय पदाधिकारी राजेश सुराणा, गुजरात प्रदेश वैश्य फेडरेशन के अध्यक्ष सुनील गिगल, बी जे एस के सचिव संजय चावत आदि महानुभाव मौजूद थे।

नोडल के शिक्षकों का प्रशिक्षण आयोजित हुआ

चित्तौड़गढ़. शाबाश इंडिया

राजस्थान में शिक्षा के बढ़ते कदम अभियान के तहत आज राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय ठिकरिया जिला -चित्तौड़गढ़ में अरनिया पंथ नोडल के अंतर्गत आने वाला विद्यालयों के शिक्षकों का प्रशिक्षण सम्पन्न हुआ। ठीकरिया विद्यालय के प्रधानाध्यापक संजय कुमार जैन ने बताया कि आज आयोजित प्रशिक्षण में ब्लॉक सन्दर्भ व्यक्ति व अरनिया पंथ अभिषेक चाष्टा ने राजस्थान में शिक्षा के बढ़ते कदम अभियान के विषय मे बताते हुए नवम्बर माह में RK-smbk के तहत आयोजित होने वाले प्रथम आकलन के विषय मे बिंदुवार जानकारी दी, आकलन की प्रक्रिया क्या होगी, यह क्यों करवाया जा रहा है। इसके चरण क्या होंगे? बच्चों से आकलन पत्र कैसे हल करवाना है? उन्हें किस प्रकार एप्प से अपलोड करना है? इस कार्यक्रम में शिक्षकों को क्या सावधानियां रखनी है। 12 से 18 अक्टूबर तक आंकलन हेतु अभ्यास कार्य किस प्रकार करना है? कक्षा 3 से 8 तक हिंदी, अंग्रेजी व गणित विषय पढ़ाने वाले अध्यापको की मैपिंग, एप्प पर डाटा फीडिंग, एप्प का उपयोग आदि पर बिंदुवार जानकारी दी एवं शिक्षकों के डाउट का भी समाधान किया।

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतु का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com
weeklyshabaas@gmail.com

काँसे की थाली में खाना खाने के क्या फायदे हैं?

डॉ पीयूष त्रिवेदी
आयुर्वेदाचार्य
चिकित्साधिकारी राजकीय आयुर्वेद चिकित्सालय राजस्थान
विधानसभा,जयपुर। 9828011871

किसी जमाने में भारतीय रसोई में कांसे, तांबे, पीतल और मिट्टी के बर्तन ही पाए जाते थे और कांसे के बर्तनों का उल्लेख प्राचीन काल से ही मिलता है। लेकिन समय के साथ साथ लोग मॉर्डन होते गए और स्टील व फाइबर प्लास्टिक व ग्लास के बर्तनों का उपयोग करने लगे। कांसे के बर्तनों में भोजन करना आरोग्यप्रद और रक्त व त्वचा रोगों से बचाव करने वाला बताया गया है। कांसा एक मिश्रधातु है जो तांबा और रांगा (वंग) धातु को निश्चित अनुपात में मिलाकर बनाई जाती है। कांसा को संस्कृत में 'कांस्य' और अंग्रेजी में 'ब्रोंज' कहते हैं। आज भी कांस्य आदि के बर्तनों का उपयोग अच्छा माना जाता है। कांसे के बर्तन जीवाणुओं और विषाणुओं को मारने की क्षमता रखते हैं। कांसे के बर्तनों में भोजन करना आरोग्यप्रद, असंक्रमण, रक्त तथा त्वचा रोगों से बचाव करने वाला बताया गया है। कब्ज और अम्लपित्त की स्थिति में इनमें खाना फायदेमंद होता है। इन पात्रों में खाद्य पदार्थों का सेवन करना रुचि, बुद्धि, मेधा वर्धक और सौभाग्य प्रदाता कहा गया है तथा यकृत, प्लीहा के रोगों में फायदेमंद है।

कांसे के बर्तन में खाना खाने के स्वास्थ्य लाभ

आयुर्वेदिक एक्सपर्ट डॉक्टर दीक्षा भावसार के अनुसार, कांसा को 'कांसायं बुद्धिवर्धकम्' कहा जाता है, अर्थात इसे बुद्धि बढ़ाने में लाभदायक माना जाता है। यदि हम कांसे के बर्तनों में अपना खाना खाते हैं या पानी पीते हैं तो इससे खाना व पानी तो शुद्ध होता ही है साथ में इससे हमारी इम्यूनिटी भी बढ़ती है। कांसे का बर्तन स्वास्थ्य के लिए अच्छा होता है। कांसा हीट का एक अच्छा कंडक्टर है इसलिए यदि आप इसमें कोई गर्म खाने की चीज रखते हैं तो वह लंबे समय तक गर्म रहती है और उसमें उसका पोषण भी ज्यों का त्यों रहता है। यदि आप कांसे के बर्तनों में खाना रखते हैं तो यदि आपके खाने में कोई जर्म्स या कीटाणु भी होते हैं तो वह कांसा के सम्पर्क में आने के कुछ समय बाद ही खत्म हो जाते हैं और आपका खाना शुद्ध हो जाता है। यदि आप कांसा के बर्तनों में पानी रखते हैं तो उसे 8 घंटे तक ऐसा रखने के बाद पानी पर एक सकारात्मक असर पड़ता है जिससे वह आपके दोषों को संतुलित करने में लाभदायक होता है। भारत में कांस्य की लुटिया में रात को पानी रख कर सोने की व सुबह उठकर उस पानी को पी लेने की मान्यता भी है। कांसा एसिडिक खाद्य पदार्थों व खट्टी चीजों के साथ रिएक्ट भी नहीं करता है। चूंकि कांसा एक एल्केलाइन मेटल है इसलिए यह हमारे रक्त की शुद्धि करने में भी लाभदायक माना जाता है। इसे रोजाना प्रयोग के लिए भी उपयुक्त माना जाता है क्योंकि यह सालों तक बिना खराब हुए ऐसे ही रह सकता है।

चैम्बर भवन में तीन पुस्तकों का आज होगा विमोचन

जयपुर. शाबाश इंडिया। कलम प्रिया लेखिका साहित्य संस्थान के बैनर तले एमआई रोड स्थित राजस्थान चैम्बर्स एंड कॉमर्स भवन के सभागार में शुक्रवार को दोपहर 2 बजे तीन पुस्तकों का विमोचन किया जाएगा। संस्थान की अध्यक्ष शशि सक्सेना व उपाध्यक्ष डॉ.अंजू सक्सेना ने बताया कि इस मौके पर समारोह के मुख्य अतिथि राजस्थान विप्र बोर्ड के अध्यक्ष महेश शर्मा,विशिष्ट अतिथि हिन्दी भाषा प्रसार-प्रसार समिति के अध्यक्ष डॉ.अखिल शुक्ला,लघु कथा विशेषज्ञ गोविन्द भारद्वाज, संस्कृत साहित्यकार डॉ.शारदा कृष्ण व सामाजिक कार्यकर्ता श्रीमती मंजू शर्मा होगी। समन्वयक पवनेश्वरी वर्मा ने बताया कि समारोह के दौरान शशि सक्सेना संपादित सांझा संग्रह कटोरी चीनी की,लेखिका शशि सक्सेना की कलम काव्य संग्रह व लेखिका शशि सक्सेना की जीवन संगीत एकल का विमोचन किया जाएगा।

दिगम्बर जैन महासमिति राजस्थान अंचल

अधिवेशन एवं सम्मान समारोह

: पावन सान्निध्य :

परम पूज्य आचार्य श्री 108 सुनीलसागर जी महाराज, ससंघ

• रविवार, दिनांक 16 अक्टूबर, 2022 •

स्थान : तोतूका सभागार, भट्टारक जी की नसियाँ, जयपुर

प्रथम सत्र : प्रात : 8.30 बजे से दोपहर 12.15 बजे तक

द्वितीय सत्र : दोपहर 1.30 बजे से सायं 5.00 बजे तक

प्रातः एवं सायंकाल- सामूहिक सहभोज

आप सादर आमंत्रित हैं।

परम पूज्य आचार्य श्री सुनील सागर जी महाराज का विशेष संदेश

दोपहर 4.15 बजे से सायं 5.00 बजे तक

: अतिथिगण :

प्रथम सत्र : प्रात : 8.30 बजे से दोपहर 12.15 बजे तक

मुख्य अतिथि : श्री अशोक जी बड़जात्या
राष्ट्रीय अध्यक्ष, दिगम्बर जैन महासमिति

अध्यक्षता : श्री महेन्द्र कुमार जी पाटनी
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष, दिगम्बर जैन महासमिति

प्रमुख अतिथि : श्री सुरेन्द्र कुमार जी पाण्ड्या
राष्ट्रीय महामंत्री, दिगम्बर जैन महासमिति

सम्मानीय अतिथि : श्री नवीन सेन जी जैन
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष, दिगम्बर जैन महासमिति

चित्र अनावरणकर्त्ता : श्री अशोक कुमार जी गोधा
टैक्स एडवोकेट

दीप प्रज्ज्वलनकर्त्ता : श्री शरद जी मिश्रा
डायरेक्टर, त्रिमूर्ति बिल्डर्स एण्ड डवलपर्स, जयपुर

विशिष्ट अतिथि : डॉ. मोहनलाल जी जैन 'मणि'
प्रख्यात होम्योपैथिक चिकित्सक

द्वितीय सत्र : दोपहर 1.30 बजे से सायं 5.00 बजे तक

मुख्य अतिथि : श्री अशोक जी बड़जात्या
राष्ट्रीय अध्यक्ष, दिगम्बर जैन महासमिति

अध्यक्षता : श्री अनिल जी जैन I.P.S. (Retd.)
अध्यक्ष, दिगम्बर जैन महासमिति राजस्थान अंचल

चित्र अनावरणकर्त्ता : इंजि. श्री प्रेम चन्द जी छाबड़ा, प्रख्यात समाजसेवी

दीप प्रज्ज्वलनकर्त्ता : डॉ. पी. सी. जैन, बापू नगर
संयुक्त निदेशक : पशु पालन विभाग, जयपुर

सम्मानीय अतिथि : श्री महेन्द्र कुमार जी पाटनी
: श्री सुरेन्द्र कुमार जी पाण्ड्या, श्री नवीन सेन जी जैन

विशिष्ट अतिथि : श्री इंजि. श्री सतीश जी बाकलीवाल, प्रख्यात समाजसेवी
: श्री वीरेन्द्र कुमार जी सेठी, प्रख्यात समाजसेवी

{'अवनि से अम्बर' स्मारिका} विमोचनकर्त्ता श्री मुकेश जी जैन (एडवोकेट), अजमेर

: निवेदक :

अनिल कुमार जैन
I.P.S. (Retd.)
अंचल अध्यक्ष

महावीर बाकलीवाल	**सुरेश जैन 'बाँदीकुई'**	**डॉ. णमोकार जैन**
अंचल महामंत्री	अंचल कोषाध्यक्ष	संयोजक

एवं समस्त पदाधिकारीगण एवं कार्यकारी सदस्यगण

श्रद्धा व प्रेम से मनाया प्रेम और समर्पण का महापर्व

उदयपुर. शाबाश इंडिया। पति-पत्नी के आपसी प्रेम और समर्पण का महापर्व करवा चौथ लेकसिटी में गुरुवार को दिन भर बिना कुछ खाए-पीए रहकर सुहागिनो ने अपने पति की लंबी आयु, सुखी जीवन, सौभाग्य और समृद्धि की कामना के साथ रात को चंद्रमा के दर्शन कर मनाया। हिंदू पंचांग के अनुसार हर वर्ष कार्तिक माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि पर करवा चौथ का पर्व मनाया जाता है। यह सुहागिनों के सबसे बड़े त्योहार में से एक है। इस खास दिन सुहागिन महिलाएं पूरे दिन निराहार और निर्जल रहती हैं। शाम को सोलह श्रृंगार करके माता की पूजा कर कथा सुनती हैं फिर रात को चांद के निकलने पर अर्ध्य देते हुए पति के हाथों से पानी पीकर व्रत तोड़ती हैं। ज्योतिषियों के अनुसार आज का दिन यानी गुरुवार को पूरे 46 वर्षों बाद सभी ग्रहों में सबसे ज्यादा शुभ फल देने वाले गुरु ग्रह अपनी स्वयं की राशि में रहने से एक खास और सुखद संयोग बना है। जिसमें सुहागिनों ने चंद्रमा उदय होने पर दर्शन कर उनकी पूजा की। पूजा के बाद पति के हाथों से जल ग्रहण कर उनके माथे तिलक लगाया और व्रत खोला। इसके बाद अपनी सासू मां के पैर छूकर आशीर्वाद लेते करवा भेंट किए। शहर में कई स्थानों पर जाति समुदायों की ओर से सामूहिक रूप से व्रत कथा सुनी गई और उद्यापन भी सम्पन्न हुए।

रिपोर्ट एवम फोटो: राकेश शर्मा 'राजदीप' मोबाइल 9829050939